17 अप्रैल 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 2 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (द्वितीय), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

असामाजिक तत्त्वों द्वारा निन्दनीय कृत्य

● मौ-भिण्ड (म.प्र.) में ब्रह्मचारिणी बहिन के साथ मारपीट, अभद्रता एवं शीलहरण का प्रयास ● ब्रह्मचारिणी बहिन के शरीर पर अनेक चोटें/फ्रैक्चर ● गम्भीर हालत में जेएच हॉस्पिटल, ग्वालियर में भर्ती ● जैन समाज में घोर आक्रोश

मौ-भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ 25 वर्षीय ब्रह्मचारिणी बहिन को अगवा करने के बाद लाठी-डण्डों से पीटने एवं उनके शीलहरण का प्रयास किया गया।

अमायन-भिण्ड (म.प्र.) स्थित ब्रह्मचर्य आश्रम में रहने वाली 25 वर्षीय ब्रह्मचारिणी बहिन ने लगभग एक वर्ष पूर्व गृहत्याग कर धर्मध्यानपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा अंगीकार की थी। दिनांक 18 मार्च को वह अपने गृह निवास मौ में परिवारजनों से मिलने आयी थी। 20 मार्च को यहाँ के कुछ असामाजिक तत्त्वों ने उनके घर में घुसकर उनका अपहरण किया, मारपीट की एवं शीलहरण का निन्दनीय प्रयास किया। अपहरण की जानकारी प्राप्त होने पर जब उसके पिता वहाँ पहुँचे तो उन लोगों ने उन्हें भी बहुत बुरी तरह पीटा। परिणामस्वरूप उन्हें भी ग्वालियर अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस घटना की जानकारी प्राप्त होते ही विभिन्न धर्मों के धर्माचार्य, पुलिस, प्रशासन अधिकारी एवं सामाजिक बन्धु उनकी हालत जानने एवं इस निन्दनीय कृत्य का विरोध प्रदर्शन करने के लिए ग्वालियर अस्पताल पहुँचे।

केन्द्रीय मंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' ने भी इस निन्दनीय कृत्य की घोर निन्दा की एवं दोषियों को गिरफ्तार करके कड़ी से कड़ी कार्यवाही करने को कहा।

पुलिस आई.जी. श्री अफजल साहब ने भी इस मौके पर दोषियो के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करने की बात कही।

इस घटना को गंभीरता से लेते हुए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज चौहान ने अपराधियों पर कड़ी कार्यवाही करने के निर्देश दिये।

श्री पवनजी जैन मंगलायतन, श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, पण्डित हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अशोकजी लुहाडिया मंगलायतन इत्यादि मुमुक्षु समाज के अनेक गणमान्य महानुभावों ने दिनांक 8 अप्रैल को मौ पहुँचकर पीडित परिवार को सान्त्वना दी और न केवल मुमुक्षु समाज अपितु सम्पूर्ण जैनसमाज इस घटना में उनके साथ खड़ा है, ऐसा साहस प्रदान किया।

राजनैतिक एवं शासकीय मोर्चों पर भी सभी के अनेक प्रयत्नों के फलस्वरूप सभी अपराधी पकड़े जा चुके हैं।

श्री टोडरमल स्मारक भवन में भी इस सम्पूर्ण घटनाक्रम की जानकारी देते हुए एक निंदा प्रस्ताव पारित किया गया।

इस घटना से सम्पूर्ण देश का जैन समाज उद्वेलित है और दोषियों पर कड़ी कार्यवाही की शासन से माँग करता है।

संघे शक्ति कलौ युगे !

अन्तरराष्ट्रीय विद्वान डॉ. भारिल्ल ने इस घटना की कड़ी भर्त्सना करते हुए पीड़ित पक्ष को हर मोर्चों पर यथासंभव सहयोग करने की अपील की। करते हुए उन्होंने इस घटना के संदर्भ में जैनसमाज की एकता और सक्रियता की आवश्यकता पर बल दिया।

यह तो एक सहज संयोग है कि यह घटना मुमुक्षु समाज की बेटी के साथ घटी, ऐसी घटनायें किसी भी सम्भ्रान्त भाई बहिन पर घटित हो सकती है।

अत: सम्पूर्ण समाज का यह परम कर्तव्य है कि वह इसके विरूद्ध न केवल वातावरण बनाये, अपितु रचनात्मक कदम उठाये, जिससे भविष्य में किसी भी बहिन के साथ इस प्रकार की दुर्घटनायें संभव न हों।

सम्पादकीय -

महावीर जयन्ती पर विशेष -

भगवान महावीर : पशु से परमात्मा बनने की यात्रा

- पण्डित रतनचंद भारिल्ल,
शास्त्री, न्यायतीर्थ, एम.ए., बी.एड., साहित्यरत्न

भगवान महावीर की कहानी न केवल बालक वर्धमान से तीर्थंकर भगवान महावीर बनने की कहानी है, अपितु पशु से परमात्मा बनने की कहानी है। संसारी से सिद्ध बनने की कहानी है। अनन्त दु:खी प्राणी से अनन्त सुखी बनने की ऐसी प्रेरणाप्रद कहानी है कि जिसे सुनकर हम भी पामर से परमात्मा बन सकते हैं।

इसलिए उनकी इस प्रेरणाप्रद कहानी को प्रतिवर्ष वर्ष-वर्ष में दो-दो बार याद किया जाता है, महोत्सव के रूप में जोर-शोर से मनाया जाता है। एक बार चैत्र शुक्ला 13 उनकी जयन्ती के रूप में और दूसरी बार दीपावली के रूप में।

भगवान महावीर महावीर बनने के दसभव पहले एक क्रूर पशु की पर्याय में थे, हम तुम से भी गई बीती स्थिति में थे।

भली होनहार से वह क्रूर सिंह परम पूज्य आकाशगामी मुनिश्री संजय-विजय महाराजों से संबोधन प्राप्त कर सद्‌बोध को प्राप्त हुआ, वह सिंह सम्यग्दृष्टि हो गया, आत्मज्ञानी हो गया।

उसके हाथ का मांस हाथ में ही रह गया। उसकी आंखों से पश्चाताप के आंसू निकल पड़े। फिर क्या था, उस महावीर के जीव ''सिंह ने मांसाहार का त्याग तो कर ही दिया, सूखे पत्तों और सूर्य से तपे झरने के पानी से अपनी भूख-प्यास शांत की।

इस घटना से हम यह सबक सीख सकते हैं कि जब एक मांसाहारी पशु आत्मकल्याण के लिए शाकाहारी हो सकता है तो हम तो प्रकृति से ही शाकाहारी हैं, फिर हम मांस-मदिरा जैसे घृणित और हिंसा जनित वस्तुओं का त्याग क्यों नहीं कर सकते ? क्या हमें आत्म कल्याण नहीं करना है ? भगवान नहीं बनना है ? अनन्त सुखी नहीं होना है ? मांस-त्याग की प्रेरणा देते हुए सुधेश कवि ने ठीक ही कहा है -

मनुज प्रकृति से शाकाहारी,
मांस उसे अनुकूल नहीं है।
वे भी मानव जैसे प्राणी,
वे मेवा फल-फूल नहीं हैं।

अत: सिंह के जीवन से हमें यह शिक्षा लेना है कि हम अपनी जीवन रक्षा के लिए शुद्ध-सात्विक आहार-पानी का ही उपयोग करें।

जैनधर्म के मतानुसार भगवान जन्मते नहीं, बनते हैं। भगवान महावीर का जन्म भी बालक वर्धमान के रूप में वैशाली (बिहार) हुआ था। भगवान तो वे बाद में आत्मसाधना काअपूर्व पुरुषार्थ करके बने अर्थात् अपने को जानकर, पहचानकर, अपने आत्मा में ही जम-रम कर (आत्मसाधना करके) परमात्मा बने।

यद्यपि उन्होंने पूर्व में विश्वकल्याण की भावना भाकर तीर्थंकर पद प्राप्त करने का सातिशय पुण्य बांध लिया था। इस कारण वे जन्म से ही तीनज्ञान के धारी हुए। उनके गर्भ एवं जन्म के समय इन्द्रों द्वारा महोत्सव मनाया गया था; परन्तु बाद में उन्होंने भी भगवान बनने के लिए 12 वर्ष तक घोर तप किया। अत: हम यह बहाना नहीं बना सकते कि वे तो जन्म से ही भगवान थे।

तीर्थंकर प्रकृति के फल में यद्यपि उन्हें देवों द्वारा निर्मित धर्मसभा प्राप्त थी, जिसमें बैठकर सभी श्रोता उनकी दिव्यध्वनि का लाभ लेते थे; परन्तु सिंहासन से भी भगवान चार अंगुल ऊपर अधर में विराजते हैं, वे तीर्थंकर प्रकृति के फल में प्राप्त सामग्री का स्पर्श भी नहीं करते। वे पुण्य के वैभव में भी उस पुण्य के फल में प्राप्त सामग्री से पूर्ण अलिप्त रहते हैं। उन्हें भी मुनि बनकर आत्म साधना का पुरुषार्थ तो करना ही होता है, तब वे स्वरूप में मग्न होकर परमात्मा बनते हैं।

प्रत्येक आत्मा इस मार्ग पर चलकर परमात्मा बन सकता है। जैन मतानुसार भगवान कोई अलग नहीं होते। कोई भी जीव इस काल में भी मोक्षमार्ग का प्रारंभ तो कर ही सकता है। इस मार्ग पर चलकर जिनागम के अनुसार परमात्म पद प्राप्त कर अनन्त सुखी हो सकता है।

भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित चार (4) प्रमुख सिद्धांत हैं।

(1) अनेकान्त (2) स्याद्वाद (3) अहिंसा (4) अपरिग्रह। इन चार सिद्धांतों के स्तम्भों पर जैनधर्म का महल खड़ा है। वस्तुत: ये चार नहीं, बल्कि एक ही बात को कहने के चार प्रकार हैं।

1. जब वस्तु का स्वरूप चिन्तन में रहता है तो उसे अनेकान्त कहते हैं। वाणी में आते ही वही सिद्धांत स्याद्वाद कहलाता है तथा आचरण में आते ही वही सिद्धांत अहिंसा है और उसी सिद्धांत का व्यावहारिक रूप अपरिग्रह के रूप में फलित होता है।

उक्त बात को कठिन जानकर भगवान महावीर के शिष्य आचार्य अमृतचन्द्र के शिष्य उनके पास पहुँचे और बोले-महाराज ! महर्षि व्यास ने अपने शिष्यों को 18 पुराणों में न उलझाकर 18 पुराणों के सार के रूप में दो बातें बता दीं - 18 पुराणों में दो बातें प्रमुख हैं (1) परोपकार से पुण्य होता है और परपीड़ा से पाप। मूल श्लोक इसप्रकार है -

''अष्टादश पुराणेसु व्यासस्य वचन द्वयम्।
परोपकार: पुण्याय, पापाय पर पीड़नम्।।

प्रभु ! आप भी हमें जिनागम का सार बता दें। तीर्थंकर भगवान ने

आचार्य अमृतचन्द्र के शब्दों में कहा – सुनो !

अप्रादुर्भाव: खलु, रागादीनां भवत्यहिंसेति ।
तेषामेवोत्पत्ति हिंसेति जिनागमस्य संक्षेप: ।।

अर्थ : आत्मा में रागादि की उत्पत्ति होना हिंसा है और आत्मा में इनकी उत्पत्ति नहीं होना अहिंसा है । यही जिनागम का सार है ।

देखो ! पहले हिंसा क्रोधादि के रूप में पैदा होती है । जब मन में नहीं समाती तो वाणी में प्रस्फुटित होती है और काया में प्रस्फुटित होती है ।

इस तरह भाव हिंसा के साथ द्रव्यहिंसा काय के माध्यम से हो जाती है । अत: यदि हम चाहते हैं कि हिंसा से बचें, हमारे द्वारा किसी की भी हिंसा न हो तो हमें सबसे पहले वहाँ रोक लगानी होगी, जहाँ हिंसा का जन्म होता है ।

सबसे पहले मन में क्रोध आता है, फिर वाणी से गाली निकलती है तब कहीं काया से हाथ-पाँव हिलाकर किसी को मारता है ।

जीवों को मारना, सताना, दु:ख देना द्रव्य हिंसा है, जो दूसरों को दिखाई देती है । यह द्रव्य हिंसा 3 प्रकार से होती है । काया से, वाणी से एवं मन से ।

काया की हिंसा पर तो सरकार रोक लगाती है, यदि किसी को कोई मारे-पीटे तो सरकार उसे फाँसी या आजीवन कैद की सजा देती है ।

वाणी से कोई किसी को गाली दे धमकी दे तो उस पर समाज रोक लगाता है ।

यदि कोई किसी को मन से कोसे तो न उसका सरकार कुछ करती है और न समाज रोक लगा सकता है । धर्म का काम यहाँ से अर्थात् मन से प्रारंभ होता है । धर्म कहता है कि ''यदि कोई किसी को मन में भी कोसेगा तो पाप का बंध होगा, उसकी कुगति होगी ।''

इसप्रकार सरकार के दण्ड भय से काया का पाप रुकता है । वाणी का पाप समाज रोकता है और मन पर धर्म रोक लगाता है ।

जहाँ सरकार व समाज का नियंत्रण समाप्त होता है धर्म उसे नियंत्रित करता है ।

अत: आचार्य अमृतचन्द्र स्वामी ने ठीक ही कहा है – ''आत्मा में रागादि की उत्पत्ति हिंसा है और मन में रागादि की उत्पत्ति न होना अहिंसा है । यही जिनागम का सार है ।''

अत: आचार्य श्री अमृतचन्द्र ने भगवान महावीर स्वामी के अनुसार ठीक ही कहा है कि यदि हिंसा मन में ही उत्पन्न नहीं होगी तो वाणी में कहाँ से आयेगी तथा वाणी में नहीं आवेगी तो काया में भी नहीं आवेगी, काया में क्रियान्वित भी नहीं होगी । अत: मन पर प्रतिबंध लगाना ही सर्वोत्तम उपाय है ।

भाई ! जिसप्रकार यदि शराब कारखाने में बन गई तो मार्केट में आयेगी ही, मार्केट मे आ गई तो किसी न किसी के पेट में जायेगी ही । पेट में गई तो माथे में भन्नायेगी ही ।

इसी प्रकार कषायें रूप शराब आत्मा के कारखाने में बन गई तो वाणी में आयेगी, वाणी से निकलकर काया में मारपीट का रूप भी ले सकती है । अत: कषायें मन में पैदा ही न हों – यही उपाय करना होगा, एतदर्थ तत्त्वाभ्यास अति आवश्यक है ।

इसीलिए आचार्यों ने कवि दौलतराम के माध्यम से कहा है –

तातैं जिनवर कथित तत्त्व अभ्यास करीजै ।
संशय विभ्रम मोह त्याग, आपौ लख लीजै ।।

इसलिए जिनवर द्वारा कथित तत्त्व का अभ्यास करना चाहिए और संशय, विभ्रम, मोह का त्यागकर अपने आत्मा की श्रद्धा, ज्ञान एवं स्वरूप आचरण करना चाहिए ।

यद्यपि आज भगवान महावीर यहाँ नहीं हैं; परन्तु उनकी वह दिव्यदेशना आज यहाँ द्वादशांग के सार के रूप में मौजूद है । इसका भरपूर लाभ हमें मिल सकता है, मिल रहा है । उसको पढ़ने/समझने की पात्रता तो हममें हैं । बस, थोड़ी रुचि की जरूरत है ।

'जैनधर्म' किसी पंथ विशेष का नाम नहीं है । किसी व्यक्ति विशेष के कुछ सिद्धान्तों या मान्यताओं का नाम भी 'जैनधर्म' नहीं है । किसी तीर्थंकर विशेष ने इसे चलाया नहीं है, वस्तुत: 'जैनधर्म' उस वस्तुस्वरूप का नाम है, जो अनादिकाल से है और अनन्तकाल तक रहेगा । जिसप्रकार अग्नि का स्वभाव उष्णता है, पानी का स्वभाव शीतलता है, उसीप्रकार आत्मा का स्वभावमात्र ज्ञान है, क्षमा है, सरलता है, ये आत्मा के धर्म हैं । अज्ञान, काम, क्रोध, मद, मोह, क्षोभ, हिंसा, असत्य आदि आत्मा के स्वभाव नहीं, विभाव हैं, विकारी भाव हैं । अत: ये अधर्म हैं ।

आत्मा के स्वभाव और विभाव को जाने-पहिचाने बिना उक्त स्वभाव की प्राप्ति और विभावों का अभाव होना संभव नहीं है ।

आत्मा के इस स्वभाव को जानना-पहिचाना ही सम्यग्दर्शन है, सम्यग्ज्ञान है और इसी स्वभाव में स्थिरता, जमना, रमना सम्यक्चारित्र है और यही मुक्ति का मार्ग है ।

इस आत्मज्ञान के साथ स्व-संचालित विश्वव्यवस्था समझना भी अति आवश्यक है । इसके समझने से हमारा अन्तर्द्वन्द्व और बाहर का संघर्ष समाप्त हो सकता है । हम निश्चिन्त और निर्भार होकर अन्तर आत्मा का ध्यान कर सकते हैं, जो हमें पुण्य-पापरूप कर्मबन्धन से मुक्त करा कर वीतरागधर्म की प्राप्ति करा सकता है । एतदर्थ भगवान महावीर की देशना का रहस्य जिनागम के अध्ययन से हम सब जाने । इसी में हम सबका भला है ।

पुराणों में तीर्थंकरों एवं महापुरुषों के पूर्वभवों का ही वर्णन क्यों किया गया है, उनकी पीढ़ियों का क्यों नहीं, वंशावलि का क्यों नहीं?

जिन्होंने भी पुराण पढ़े या सुने हैं, उन्होंने पाया होगा कि उनमें महापुरुषों के पूर्वभवों का वर्णन ही विस्तार से है, पीढ़ियों का नहीं । माता-पिता के सिवाय अधिकांश किसी भी पीढ़ी का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता ।

ऐसा क्यों हुआ? यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विचारणीय विषय है । इसमें लौकिक व पारलौकिक ह्व दोनों दृष्टियों से अनेक तथ्य निहित हैं ।

भगवान महावीर के पूर्वभवों की प्रासंगिक उपयोगिता की गहराइयों में उतर कर देखें वहाँ भी लौकिक एवं पारलौकिक ह्न दोनों दृष्टियों से अनेक तथ्य निहित हैं।

पारलौकिकदृष्टि से विचार करें तो सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात तो यह है कि पूर्वभवों के ज्ञान से आत्मा की अनादि-अनन्तता सिद्ध होती है और आत्मा की अनादि-अनन्तता की श्रद्धा से हमारा सबसे बड़ा भय-मरणभय समाप्त होता है।

दूसरे, असंख्य भवों में हुए सुख-दुःख रूप उतार-चढ़ाव के अध्ययन से **पुण्य-पाप का स्वरूप ख्याल में आता** है और उसके फल में नाना प्रकार के अनुकूलताओं-प्रतिकूलताओं के परिचय से पुण्य-पाप तथा आस्रव-बंध तत्वों की यथार्थ प्रतीति आती है।

तीसरे, पुण्य-पाप आदि से भिन्न भगवान आत्मा के **पहचानने का सु-अवसर प्राप्त होता** है। पूर्वभवों से ही अपने आत्मा का सीधा सम्बन्ध है, पीढ़ियों से नहीं। अतः पीढ़ियों के परिचय की आवश्यकता नहीं है।

लौकिक दृष्टि से चौथी महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे हृदयों में जो नीच-ऊँच, अमीर-गरीब का भेद, धर्म और संस्कृति का भेद अथवा प्रान्त और भाषा आदि के भेद के कारण जातिवाद, वर्गवाद, प्रान्तीयता और भाषायी भेद उभरते हैं और इनसे संघर्ष की स्थिति बननी है। वे सब इन पूर्वभवों के वर्णन से सहज ही समाप्त हो जाते हैं; क्योंकि हम पुराणों में पढ़ते हैं कि हिन्दी भाषी भाई मरकर दक्षिण में पैदा हो गया। हरिजन मरकर ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न हो गया, सेठ या राजा मरकर निर्धन के यहाँ पैदा हो गया। इस प्रकार पूर्वभवों के ज्ञान से अब तक जो रंग भेद, जाति भेद, प्रान्त भेद व भाषा भेद या धर्म भेद के कारण भिन्नता की भिनभिनाहट होती थी, वह सब समाप्त हो जाती है। जो आज हिन्दू है वही कल मुसलमान हो सकता है। और तो ठीक मर कर कीड़ा-मकौड़ा भी हो सकता है, इससे कीड़ों-मकौड़ों से भी आत्मीयता हो जाती है। इसप्रकार इन सबकी सही जानकारी और श्रद्धा से देश की भी बहुत बड़ी समस्या सहज ही सुलझ सकती है। यही है पूर्वभवों के वर्णन की लौकिक व पारलौकिक उपयोगिता।

उदाहरणार्थ हम भगवान महावीर स्वामी के पूर्वभवों को देखें। जब हम इस दृष्टि से सोचते हैं तो लगता है कि ह्न भगवान महावीर के पूर्वभव वस्तुतः हमारे आत्म-कल्याण के लिए अजस्र प्रेरणा के स्रोत हैं।

भगवान महावीर की कहानी पुरुरबा नामक भील की पर्याय से प्रारंभ होती है, पुरुरबा भील जीवनभर हिंसक-हत्यारा रहा, किन्तु प्रसंग पाकर जब वह पत्नी की प्रेरणा से गुफा में साधनारत मुनिराज की हत्या के महापाप से बच गया, तो उसका हृदय अपने पूर्व में किए दुष्कृत्यों के कारण आत्म-ग्लानि से भर उठा और पश्चाताप की ज्वाला में पापों को भस्म करके आजीवन हिंसा के त्याग के फलस्वरूप सौधर्म स्वर्ग में देव हुआ। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि यदि अबतक हमारा जीवन पापमय भी रहा हो, तथापि शेष भावी जीवन को हम पवित्र बनाकर आत्मकल्याण कर सकते हैं।

इसीतरह मारीचि के भव में महावीर के जीव ने जीवनभर जिनवाणी का विरोध किया, ३६३ मिथ्यामतों का प्रचार किया; तथापि धर्मबुद्धि से मन्दकषायपूर्वक किए गए कार्यों के फलस्वरूप समतापूर्वक देह त्यागने के कारण वह ब्रह्म स्वर्ग में देव हुआ। यहाँ इतना विशेष जानना चाहिए कि मिथ्यात्व दशा में बहुत काल तक मंदकषाय नहीं रह सकती। यही कारण है कि मारीचि का जीव अपने १३ भव मनुष्य व देवगति में बिताकर अन्ततोगत्वा जड़वत् होकर ऐकेन्द्रिय रूप स्थावर पर्यायों में एवं दोइन्द्रियादि की त्रस पर्यायों में चला गया और वहाँ असंख्य भव धारण करना पड़े। एक ओर मंदकषाय का फल स्वर्ग बताया तो वहीं दूसरी ओर मिथ्यात्व के महापाप का फल त्रस व स्थावर योनियों में भी जाना पड़ा। एतदर्थ सबसे पहले मिथ्यात्व महापाप ही त्यागने योग्य है।

फिर वह काललब्धि के बल से पुनः ब्राह्मण कुल में जन्मा, वहाँ से चौथा स्वर्ग, फिर विश्वनंदी राजकुमार, त्रिपृष्ठ नारायण एवं सातवें नरक के नारकी के भवों के बाद, महावीर से पूर्व दसवें भव में सिंह पर्याय में उत्पन्न हुआ।

भगवान महावीर ने आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया इसी पर्याय में प्रारम्भ की थी। धन्य है वह पशु जिसने अपनी इस पामर पर्याय में उत्पन्न होकर भी आत्मा को जाना/पहचाना और मोक्षमार्ग की प्रथम सीढ़ी पर आरूढ़ हो गया।

इसप्रकार भगवान महावीर ने आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया इसी पर्याय में प्रारंभ की थी।

उपर्युक्त कथन से हम यह सबक सीख सकते हैं कि जब भील भगवान बन सकता है, अर्थात् मिथ्यादृष्टि बहिरात्मा-पापी जीव परमात्मा बन सकता है। शेर की पर्याय में सन्मति आ सकती है तो क्या हम मूँछ वाले समझदार कहलाने वाले मानव परमात्मा बनने का बीज भी नहीं बो सकते, क्यों नहीं बो सकते हैं? अवश्य बो सकते हैं। ●

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें !

(1) जो छात्र घर बैठे-बैठे जैनदर्शन का अध्ययन करना चाहते हैं, वे श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ के द्विवर्षीय/पंचवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं। प्रवेश फार्म जयपुर कार्यालय से मंगा लेवें।

(2) दिसम्बर 2012 में हुए द्वितीय सेमेस्टर की उत्तर पुस्तिकाएं जिन छात्रों ने नहीं भेजी हैं, शीघ्रातिशीघ्र भिजवायें।

(3) जून 2013 में मुक्त विद्यापीठ के प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाऐं आयोजित होंगी, सभी छात्र उसकी तदनुसार तैयारी करें।

- ओ.पी. आचार्य (प्रबंधक)

पाठशाला का प्रगति प्रतिवेदन

मुम्बई : यहाँ मलाड (ईस्ट) में स्थित श्री कहान दिगम्बर जैन उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय भवन ट्रस्ट के अन्तर्गत सन् 2007 में स्थापित श्रीमती प्रमिलाबेन रसिकलाल चंदुलाल मेहता वीतराग-विज्ञान पाठशाला की उपलब्धियाँ इसप्रकार हैं -

1. वर्ष में दो बार जिन मंदिर में पाठशाला के बच्चों के लिए जिनेन्द्र भगवान के प्रक्षाल और पूजन के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

2. दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पाठशाला के सभी लड़कों को धोती-दुपट्टा पहनाकर जिनेन्द्र देव का प्रक्षाल कराकर, अष्टद्रव्य से पूजन करना सिखाया जाता है।

3. पाठशाला के सभी बच्चों को पिकनिक हेतु धार्मिक स्थल त्रिमूर्ति पोदनपुर एवं मुम्ब्रा लेकर गये।

4. बच्चों को लोनावाला जिनमंदिर के दर्शन भी कराये गये।

5. दिसम्बर 2012 को छुट्टियों के समय 5 वर्ष से अधिक उम्र के बच्चों को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की कर्मभूमि सोनगढ, जन्मभूमि उमराला, धोघा, भावनगर एवं शत्रुंजय पालीताणा की यात्रा करवाई गई।

6. वर्ष में दो बार अलग-अलग प्रोजेक्ट दिये जाते हैं और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

7. अधिकांश बच्चों ने कंदमूल फल और वर्क वाली मिठाई के सेवन का एवं दीपावली में पटाखे फोड़ने का त्याग किया है।

8. पाठशाला में बच्चों की संख्या 40 से बढकर 250 हो गई है।

इस पाठशालारूपी ज्ञानयज्ञ में बच्चों में धार्मिक संस्कार डालने हेतु पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, कु. नियति गांधी, विवेक जैन, सौ. अनिता शाह, हिनाबेन शाह, प्राची शाह और अनुभूति जैन अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते हैं।

स्वाध्याय भवन में शुक्रवार रात्रि को बालपोथी, शनिवार रात्रि को बालबोध पाठमाला भाग-1, 2, 3 और वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1, 2, 3, रविवार को प्रात: बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 1, 2 की कक्षायें चलती हैं। मंगलवार से शुक्रवार तक महिलाओं की कक्षायें चलती है।

अधिक से अधिक बच्चे धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनायें इसलिये मलाड, कांदीवली एवं गोरेगांव के विभिन्न हिस्सों से बच्चों के आवागमन हेतु 11 वैन की नि:शुल्क व्यवस्था की गई है। बच्चों को आकर्षिक करने हेतु प्रति सप्ताह गिफ्ट एवं पुरस्कार की व्यवस्था भी की गई है।

मुम्बई जैसी मायानगरी की व्यस्तता होते हुए भी बालकों को संस्कारित करने के लिए कार्यकर्ताओं का समर्पण एवं माता-पिता की रुचि प्रशंसनीय है। अत: अन्य पाठशालायें भी इससे प्रेरणा प्राप्त करें।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में -

विदाई समारोह सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 अप्रैल को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: पंचतीर्थ जिनालय पर जिनेन्द्र पूजन और रात्रि में भव्य जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर दो सत्रों में आयोजित विदाई समारोह में प्रथम सत्र की अध्यक्षता अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-टोडरमल महाविद्यालय) ने व द्वितीय सत्र की अध्यक्षता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल (निदेशक-टोडरमल महाविद्यालय) ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी वैद्य जयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर, डॉ. कमलेशजी जैन, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, श्री शान्तिलालजी जैन अलवरवाले, श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर, श्री अजितजी तोतुका जयपुर, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संतोषजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती कमला भारिल्ल श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्रीमती श्रीकान्ता छाबड़ा एवं कु. प्रतीति पाटील इत्यादि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में अनेक विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया तथा स्वयं को सौभाग्यशाली बताया। इस अवसर पर एक विद्यार्थी ने जीवनपर्यन्त समयसार को टीका सहित 100 बार पढने का संकल्प व्यक्त किया। महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी एवं विशिष्ट अतिथियों ने विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य बनाने की प्रेरणा, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन दिया।

डॉ. भारिल्ल ने तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों से कहा कि अभी तक तो आप यहाँ अपने शिक्षकों से शिक्षा ले रहे हैं। उन्होंने आपको सर्वप्रकार से योग्य बनाया है। अब आपको बाहर कार्यक्षेत्र में जाकर अपनी योग्यता सिद्ध करनी है। अत: अब उसके लिए तैयार हो जाओ। इसप्रकार डॉ. भारिल्ल ने सभी विद्यार्थियों को तत्त्वज्ञान का प्रचार करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा अपने अग्रजों को निम्न संदेश दिया गया -

''अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढे चलो बढे चलो।''

इसी क्रम में शास्त्री द्वितीय वर्ष की ओर से नियम जैन ने कविता और पंकज जैन व कुलभूषण जैन ने विदाई गीत की प्रस्तुति दी।

अंत में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी छात्रों को फोटो, गिफ्ट, श्रीफल और ग्रन्थ भेंटकर सम्मानित किया गया। (शेष पृष्ठ 7 पर...)

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

114 सातवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

अभी तक आत्मा को अनेक आगम प्रमाणों और युक्तियों से परोक्ष ही सिद्ध करते आ रहे हैं; अत: शिष्य के चित्त में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि जब आत्मा अनुभव में परोक्षरूप से ही ज्ञात होता है तो फिर आगम में उसे प्रत्यक्ष क्यों कहा, अनुभव प्रत्यक्ष क्यों कहा ?

उक्त प्रश्न के उत्तर में पण्डित टोडरमलजी एक बार फिर दुहराते हैं कि अनुभव में तो आत्मा परोक्ष ही है। उसके बाद उसे परमागम में प्रत्यक्ष कहने की अपेक्षा स्पष्ट करते हैं, प्रत्यक्ष कहने का कारण बताते हैं।

कहते हैं कि आत्मा नहीं, अपितु आत्मस्वरूप में परिणाम मग्न होने से जो आनन्द का वेदन होता है, वह प्रत्यक्ष है; क्योंकि जो स्वानुभव का स्वाद आया, आनन्द की अनुभूति हुई; वह शास्त्रों में पढ़-पढ़कर या गुरु मुख से सुन-सुनकर नहीं हुई है; अपितु उसने उस आनन्द का साक्षात् वेदन किया है, उस आनन्द को भोगा है।

वे अपनी बात को स्पष्ट करते हुए मिश्री खानेवाले अन्धे व्यक्ति का उदाहरण देते हैं। जन्मान्ध व्यक्ति ने मिश्री का रूप-रंग और आकार-प्रकार को आँखवालों से सुनकर जाना है; पर उसका स्वाद, उसके रस का ज्ञान-आनन्द किसी के कहने मात्र से नहीं जाना है; अपितु स्वयं चखा है; उसे चख कर मात्र जाना ही नहीं है, अपितु उसका आनन्द लिया है, वेदन किया है, भोगा है।

सुख-दुःख की अनुभूति के साथ जानने को वेदन कहते हैं।

अनुभव को प्रत्यक्ष कहने का एक कारण तो यह है और दूसरा कारण बताते हुए पण्डितजी कहते हैं कि **लगभग प्रत्यक्ष की भाँति विशद होने से, स्पष्ट होने से, निर्मल ज्ञान होने से उसे प्रत्यक्ष कहने का व्यवहार है।**

इसप्रकार के अनेक प्रयोग लोक में पाये जाते हैं। जैसे हम कहते हैं कि आज मैंने तुम्हें स्वप्न में प्रत्यक्ष देखा। तुम मंदिर में दर्शन कर रहे थे और मैं सामने आया। न केवल तुम्हें देखा, अपितु तुमसे बात भी की थी।

सामनेवाला कहता है कि मैं तो मंदिर गया ही नहीं तो तुमने मुझे मंदिर में प्रत्यक्ष कैसे देखा ?

तब वह कहता है कि मंदिर में मैं भी कहाँ गया था। मैं भी घर में ही सो रहा था।

''ऐसे में तू मुझे मंदिर में कैसे देख सकता है ?''

''क्यों नहीं, क्योंकि मैंने तुझे स्वप्न में प्रत्यक्ष देखा था।''

जिसप्रकार स्पष्टता के आधार पर स्वप्न में देखने को भी प्रत्यक्ष कह दिया जाता है; उसीप्रकार यहाँ भी आत्मा के जानने को व्यवहार से प्रत्यक्ष देखा कहा गया है।

अरे, भाई ! स्वप्न में देखना तो सही नहीं है। उसके समान कहकर तो तुम अनुभव के प्रत्यक्षपने को एकदम अभूतार्थ कह रहे हो।

जब हमारे पास प्रत्यक्ष ज्ञान है ही नहीं, फिर भी प्रत्यक्ष कहना किसप्रकार का व्यवहार होगा। इस बात को उदाहरण से पण्डितजी ने स्पष्ट किया है। जिसप्रकार स्वप्न में वह व्यक्ति था ही नहीं; उसीप्रकार प्रत्यक्ष ज्ञान है ही नहीं तो फिर क्या कहें ?

अरे, भाई ! मति-श्रुतज्ञान परोक्ष हैं और उनके द्वारा ही आत्मा को जाना गया है। आत्मा का ज्ञान तो प्रत्यक्ष हुआ ही नहीं, आनन्द का वेदन प्रत्यक्ष जैसा हुआ है। यही अपेक्षा है।

जहाँ जो अपेक्षा हो उसे सावधानी पूर्वक सही-सही समझना चाहिए।

उसको प्रत्यक्ष कहने का एक कारण यह भी हो सकता है कि उसे कोई काल्पनिक न कहने लगे, कल्पनालोक में विचरण करना न मानने लगे। लोक में प्रत्यक्ष देखे गये पदार्थों का विश्वास जिस दृढ़ता के साथ किया जाता है; वैसा पढ़ी-सुनी बात का नहीं। **कोई इसे पढ़ी-सुनी बात के समान ही न मानने लगे, उससे कुछ अधिक है यह - यह बताने के लिए भी उसे प्रत्यक्ष कहा जा सकता है। तात्पर्य यह है कि उसकी सत्ता वास्तविक है। वह आनन्द भी सिद्धों की जाति के आनन्द के समान है।**

अगले प्रश्न और उनके उत्तर पण्डितजी इसप्रकार प्रस्तुत करते हैं-

''यहाँ प्रश्न : ऐसा अनुभव कौन गुणस्थान में होता है?

उसका समाधान : चौथे से ही होता है, परन्तु चौथे में बहुत काल के अन्तराल से होता है और ऊपर के गुणस्थानों में शीघ्र-शीघ्र होता है।

फिर यहाँ प्रश्न : अनुभव तो निर्विकल्प है, वहाँ ऊपर के और नीचे के गुणस्थानों में भेद कैसे होगा ?

उसका समाधान : परिणामों की मग्नता में विशेष है। जैसे दो पुरुष नाम लेते हैं और दोनों ही के परिणाम नाम में हैं; वहाँ एक तो मग्नता विशेष है और एक को थोड़ी है - उसीप्रकार जानना।

फिर प्रश्न : यदि निर्विकल्प अनुभव में कोई विकल्प नहीं है तो शुक्लध्यान का प्रथम भेद पृथक्त्ववितर्कवीचार कहा, वहाँ 'पृथक्त्व-वितर्क' - नाना प्रकार के श्रुत का 'वीचार' - अर्थ-व्यंजन-योगसंक्रमण - ऐसा क्यों कहा ?

समाधान - कथन दो प्रकार है - एक स्थूलरूप है, एक सूक्ष्मरूप है। जैसे स्थूलता से तो छठवें ही गुणस्थान में सम्पूर्ण

ब्रह्मचर्य व्रत कहा और सूक्ष्मता से नववें गुणस्थान तक मैथुन संज्ञा कही; उसीप्रकार यहाँ अनुभव में निर्विकल्पता स्थूलरूप कहते हैं। तथा सूक्ष्मता से पृथक्त्व–वितर्क वीचारादिक भेद व कषायादिक दसवें गुणस्थान तक कहे हैं।

वहाँ अपने जानने में व अन्य के जानने में आये ऐसे भाव का कथन स्थूल जानना तथा जो आप भी न जाने और केवली भगवान ही जानें ह्न ऐसे भाव का कथन सूक्ष्म जानना। चरणानुयोगादिक में स्थूलकथन की मुख्यता है और करणानुयोग में सूक्ष्मकथन की मुख्यता है – ऐसा भेद अन्यत्र भी जानना।

इसप्रकार निर्विकल्प अनुभव का स्वरूप जानना।[१]''

उक्त प्रश्नों का उत्तर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''चतुर्थ गुणस्थान का प्रारम्भ ही ऐसे निर्विकल्प स्वानुभवपूर्वक होता है; सम्यग्दर्शन कहो, चौथा गुणस्थान कहो या धर्म का प्रारम्भ कहो – वह ऐसे स्वानुभव के बिना नहीं होता।[२]

चौथे गुणस्थान में ऐसा अनुभव कभी–कभी होता है, बाद में जैसे–जैसे भूमिका बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे काल की अपेक्षा से बार–बार होता है और भाव की अपेक्षा से लीनता भी बढ़ती जाती है।[३]

स्वानुभव की जाति तो सभी गुणस्थानों में एक है, चैतन्यस्वभाव में ही सभी का उपयोग लगा हुआ है; परन्तु इसमें परिणामों की मग्नता गुणस्थान अनुसार बढ़ती जाती है। सातवें गुणस्थान में स्वानुभव में जैसी लीनता है, वैसी तीव्र लीनता चौथे गुणस्थान में नहीं है; इसप्रकार निर्विकल्पता दोनों के होने पर भी परिणाम की मग्नता में विशेषता है।[४]

इसप्रकार गुणस्थान अनुसार स्वानुभव की विशेषता जाननी चाहिए। ज्यों–ज्यों गुणस्थान बढ़ता जाये, त्यों–त्यों कषायें घटती जायें और स्वरूप में लीनता बढ़ती जाये।[५]''

(क्रमश:)

१. रहस्यपूर्णचिट्ठी : मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३४७
२. अध्यात्म संदेश, पृष्ठ ९६ ३. वही, पृष्ठ ९८
४. वही, पृष्ठ ९८ ५. अध्यात्म संदेश, पृष्ठ ९९

निमित्त-उपादान शिविर का आयोजन

दिल्ली : श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद के तत्त्वावधान में स्थानीय पार्श्वविहार में दिनांक 19 से 21 अप्रैल तक त्रिदिवसीय निमित्त–उपादान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। परिषद के मंत्री पण्डित अशोक गोयल शास्त्री कार्यक्रम के संयोजक हैं। इनके अतिरिक्त डॉ. वीरसागर शास्त्री तथा डॉ. अनेकान्त शास्त्री कार्यक्रम के सहभागी होंगे।

– अखिल बंसल

श्री आदिनाथ जयन्ती पर विचार गोष्ठी

जयपुर (राज.) : यहाँ आदिनाथ जयन्ती की पूर्व संध्या पर दिनांक 3 अप्रैल को राजस्थान जैन सभा द्वारा राजस्थान चैम्बर भवन में 'युगप्रवर्तक के रूप में ऋषभदेव व भरत चक्रवर्ती का योगदान' विषय पर विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई।

मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने की। मुख्य अतिथि श्री रमेशचंदजी तिजारिया एवं विशिष्ट अतिथि श्री अमरचंदजी छाबड़ा थे। श्री कमलबाबू जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गोष्ठी के संयोजक श्री महेशचंदजी चांदवाड थे।

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्मप्रभावना

मुम्बई : यहाँ मलाड में श्री कहान दि. जैन उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय भवन ट्रस्ट के विशेष आमंत्रण पर फाल्गुन माह की अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 10 मार्च से 2 अप्रैल तक ब्र. यशपालजी जैन के प्रवचनों का लाभ मिला। आपने दोनों समय दशकरण विषय पर 'जीव जीता–कर्म हारा' पुस्तक के आधार से सरल भाषा में करणानुयोग का कठिन विषय समझाया। सभी ने रुचिपूर्वक लाभ लिया एवं गुणस्थान विषय पर विशेष व्याख्यान हेतु पुन: पधारने का आमंत्रण दिया। ब्र. यशपालजी ने समयानुकूलता से पधारने की स्वीकृति दी है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 27 अप्रैल	भोपाल (कोहेफिजा)	सिद्धचक्र विधान एवं महावीर जयन्ती
28 अप्रैल	भोपाल (मण्डीदीप)	मन्दिर शिलान्यास
11 मई	इन्दौर (रवीन्द्र नाट्यग्रह)	कानजीस्वामी जयन्ती
12 से 15 मई	इन्दौर (ओमविहार)	वेदी प्रतिष्ठा
21 मई से 7 जून	देवलाली	प्रशिक्षण शिविर
7 जून से16 जुलाई	विदेश	धर्मप्रचारार्थ

(पृष्ठ 5 का शेष ...)

सम्पूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन शास्त्री द्वितीय वर्ष के सभी छात्रों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अन्तर्गत महाविद्यालय के इस सत्र (2012–13) के विशिष्ट पुरस्कारों की घोषणा की गई, जिसमें विद्यालय की पाँचों कक्षाओं में आदर्श कक्षा का पुरस्कार उपाध्याय कनिष्ठ कक्षा को, आदर्श विद्यार्थी का पुरस्कार ऋषभ जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) को दिया गया। इसके अतिरिक्त कक्षा के आदर्श छात्र के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से सौरभ जैन मडदेवरा, उपाध्याय वरिष्ठ से हिमांशु जैन इटावा, शास्त्री प्रथम वर्ष से मयंक जैन टीकमगढ, शास्त्री द्वितीय वर्ष से अभय जैन सुनवाहा और शास्त्री तृतीय वर्ष से अनुपम जैन भिण्ड को पुरस्कृत किया गया। साथ ही विशेष सहयोगी के रूप में पृथक् से चिकित्सा सेवा की व्यवस्था में सहयोग करने हेतु विवेक जैन अमरमऊ को पुरस्कृत किया गया।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं
पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आयोजित

47वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2013 से 7 जून 2013 तक

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित होने जा रहा है।

प्रशिक्षण शिविर में देवलाली पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

विशिष्ट कार्यक्रम -

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह -	21 मई
अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन -	26 मई
टोडरमल स्नातक परिषद का महाराष्ट्र प्रान्तीय सम्मेलन -	1 जून
अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् द्वारा आयोजित विद्वत्संगोष्ठी -	2 जून
प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन -	6 जून
दीक्षान्त एवं समापन समारोह -	7 जून

हार्दिक अनुरोध :-

1. आपके यहाँ से कितने भाई-बहिन एवं प्रशिक्षणार्थी शिविर में पधार रहे हैं व कब से कब तक रहेंगे, इसकी पूर्व सूचना 1 मई तक जयपुर कार्यालय को अनिवार्य रूप से भिजवायें ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

2. श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर,
जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458
Email-ptstjaipur@yahoo.com

देवलाली का पता - पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली, नासिक-422401 (महा.)
फोन नं. (0253) 2491044

क्या आप चाहते हैं ?

- आपके बालकों का जीवन जैन तत्त्वज्ञान के संस्कारों से सुशोभित हो।
- वे जैन तत्त्वज्ञान के ठोस विद्वान बनें।
- वे स्वपर के कल्याण में अपना जीवन लगायें।

यदि हाँ तो शीघ्रता करें,

अपने बालकों को जैनदर्शन शास्त्री कराने हेतु श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर में प्रवेश दिलायें।

इस विद्यालय में -

- दसवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण मात्र 50 छात्रों को उपाध्याय कनिष्ठ (11वीं कक्षा) में प्रवेश दिया जायेगा।

- छात्र यहाँ 5 वर्ष तक रहकर राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से जैनदर्शन शास्त्री (स्नातक के समकक्ष) की डिग्री प्राप्त करते हैं, जो पूरे देश में मान्य है।

- छात्रों की आवास/भोजन/शिक्षा/स्वास्थ्य की सभी उच्चस्तरीय सुविधायें संस्था द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं।

प्रवेशार्थी छात्रों को -

21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में रहना अनिवार्य है। महाविद्यालय में प्रवेश हेतु छात्रों का चयन इसी शिविर में होता है।

विशेष जानकारी एवं प्रवेश आवेदन पत्र प्राप्त करने हेतु संपर्क करें-

पण्डित रतनचंद भारिल्ल	पण्डित शान्तिकुमार पाटील	पण्डित सोनू शास्त्री
प्राचार्य	उपप्राचार्य	अधीक्षक

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर
मो. 9785643277 (सोनूजी)

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127